सौतेला भाई था। उसका जन्म माता कुन्ती की कन्यावस्था में, महाराज पाण्डु से उनका विवाह होने के पूर्व हुआ। कृपाचार्य की पत्नी द्रोण की यमजा बहन थी।

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः।।९।।

अन्ये=और, **च**=भी; **बहवः**=अनेक; **शूराः**=शूरवीर; **मत्-अर्थे**=मेरे लिए; **त्यक्तजीविताः**=प्राणार्पण को उद्यत; **नाना**=विविध; **शस्त्रप्रहरणाः**=शस्त्रों में युक्त हैं; **सर्वे**=सब के सब; **युद्ध**=रण में; **विशारदाः**=कुशल हैं।

अनुवाद

अन्य अनेक शूरवीर भी मेरे लिए प्राणों की आहुति देने को उद्यत हैं। वे सभी विविध शस्त्रों से सुसज्जित हैं और युद्ध-कला में निपुण हैं।।९।।

तात्पर्य

जहाँ तक जयद्रथ, कृतवर्मा, शल्य, प्रभृति अन्यान्य योद्धाओं का सम्बन्ध है, वे सभी दुर्योधन के लिए प्राणोत्सर्ग करने को कृतसंकल्प हैं। प्रकारान्तर से, यह पूर्वनिश्चित है कि पापाचारी दुर्योधन का पक्ष लेने के कारण कुरुक्षेत्र के युद्ध में वे सब के सब अवश्यमेव कालकवलित हो जायेंगे। तथापि, मित्रों के पूर्वोक्त समवेत बल के आधार पर दुर्योधन को पूर्ण विश्वास है कि अन्त में वही विजयी होगा।

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्।।१०।।

अपर्याप्तम्=अपार (है); **तत्**=वह; **अस्माकम्**=हमारा; **बलम्**=सैन्यबल; **भीष्म**=पितामह भीष्म द्वारा; **अभिरक्षितम्**=भलीभाँति संरक्षिण; **पर्याप्तम्**=सीमित है; **तु**=किन्तु; **इदम्**=इन; **एतेषाम्**=पाण्डवों का; **बलम्**=बल; **भीम**=भीम द्वारा; **अभि-रक्षितम्**=सावधानीपूर्वक रक्षित।

अनुवाद

पितामह भीष्म द्वारा भलीभाँति संरक्षित हमारा सैन्यबल निस्सन्देह अपार है, जबकि भीम द्वारा सावधानीपूर्वक रक्षित पाण्डवों का सैन्यबल अत्यन्त सीमित है।।१०।।

तात्पर्य

इस श्लोक में दुर्योधन ने दोनों सेनाओं के बल की तुलना की है। उसकी धारणा में सब से अधिक अनुभवी सेनानायक पितामह भीष्म द्वारा विशेष रूप से संरक्षित होने से उसका सैन्यबल अपार है। दूसरी ओर, पाण्डवों का सैन्यबल अत्यन्त सीमित है, क्योंकि उसका नेतृत्व अल्प अनुभवप्राप्त भीम कर रहे हैं, जो भीष्म की तुलना में तृणतुल्य हैं। दुर्योधन भीम के प्रति सदा ईर्ष्याभाव से ग्रस्त रहता था, क्योंकि वह यह भलीभाँति जानता था कि उसकी मृत्यु केवल भीम के हाथ ही हो सकेगी। परन्तु इस समय स्वपक्ष में भीम से कहीं उत्कृष्ट सेनापति भीष्म की